डी.एल.एड (बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम रूपरेखा

वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, बाल–मनोविज्ञान तथा बच्चों के सीखने–लिखने की प्रक्रिया एवं बालगत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा के शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु नवीन शिक्षण–विधियों, तकनीकों, शैक्षिक–नवाचारों एवं समसामयिक विषयवस्तु को द्विवर्षीय बी.टी.सी. पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बी.टी.सी. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर तथा द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर 6 माह (न्यूनतम 120 शैक्षिक दिवस एवं 10 परीक्षा दिवसों) का होगा।

सेमेस्टरवार विषय विभाजन सारिणी– प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र व विभिन्न विषयगत प्रश्नपत्र एवं एक माह का इण्टर्नशिप समाहित किया गया है जिनका विवरण निम्नवत् है–

प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय सेमेस्टर	तृतीय सेमेस्टर	चतुर्थ सेमेस्टर
सैद्धान्तिक विषय			
बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया (edu 01)	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा (edu 03)	शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार (edu 05)	आरम्भिक स्तर पर भाषा के पाठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास (edu 07)
शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त (edu 02)	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास (edu 04)	समावेशी शिक्षा (edu 06)	शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशासन (edu 08)
सामान्य विषय			
विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान
गणित	गणित	गणित	गणित
सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन
हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी
संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी	संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी
कम्प्यूटर शिक्षा	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	कम्प्यूटर शिक्षा	शांति शिक्षा एवं सतत् विकास
कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/ स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/ स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/ स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)
इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप

कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य में से किसी एक विषय का चयन प्रशिक्षु द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में किया जाएगा, जिसका मूल्यांकन विषयाध्यापक द्वारा ही किया जाएगा, इसी प्रकार 3 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस.यू.पी.डब्लू.) विषय का भी मूल्यांकन मात्र विषय अध्यापक द्वारा ही किया जाएगा। इन विषयों की लिखित/वाह्य परीक्षा नही होगी।

सेमेस्टर–3

(Edu 05) शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को मूल्यांकन की आवश्यकता एवं उद्देश्यों से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन विधाओं से अवगत कराना।
- बच्चों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रशिक्षित करना।
- कमजोर छात्रों की प्रगति हेतु निदानात्मक शिक्षण विधि के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।
- प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं के निराकरण करने हेतु क्रियात्मक शोध की जानकारी देना।
- शिक्षा में नवाचार की अवधारणा से परिचित कराना।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्त्व, मूल्यांकन के पक्ष, मूल्यांकन के प्रकार, उत्तम परीक्षण, मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना।
- प्रश्न पत्र निर्माण प्रक्रिया, मूल्यांकन का अभिलेखीकरण, निदानात्मक शिक्षण की जानकारी द्वारा प्रशिक्षुओं को शिक्षण कार्य में इनका प्रयोग करने में समर्थ बनाना।
- शिक्षण कार्य में क्रियात्मक शोध एवं शैक्षिक नवाचार करने हेतु प्रोत्साहित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई.सी.टी. के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

पाठ्यक्रम (Syllabus) - शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

मापन एवं मूल्यांकन

1) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन की अवधारणा।
   - i) शैक्षिक मापन का अर्थ
   - ii) मूल्यांकन की संकल्पना
   - iii) मूल्यांकन के उद्देश्य
   - iv) मूल्यांकन के क्षेत्र
2) मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्त्व।
   - i) मूल्यांकन की प्रशासनिक आवश्यकता
   - ii) मूल्यांकन की शैक्षिक आवश्यकता
   - iii) मूल्यांकन की शैक्षिक अनुसंधान में आवश्यकता
   - iv) सामाजिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन की आवश्यकता
3) मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर।
   परीक्षण एवं मापन में अन्तर
4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्त्व।
   - i) दक्षता आधारित मूल्यांकन
   - ii) व्यापक मूल्यांकन
   - iii) सतत् मूल्यांकन एवं महत्त्व

iv) सतत् मूल्यांकन की कार्यप्रणाली एवं सोपान
v) सतत् मूल्यांकन का क्षेत्र।
vi) सतत् मूल्यांकन की कार्य–प्रणाली एवं सोपान

5) मूल्यांकन के पक्ष।

i)	संज्ञानात्मक (Cognitive)	ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग या व्यावहारिकता, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन
ii)	भावात्मक (Affective)	ग्रहण करना या ध्यान देना, अनुक्रिया करना, मूल्य आंकना, संगठन, मूल्य द्वारा विशिष्टीकरण
iii)	कौशलात्मक (Conative) एवं व्यवहारात्मक (Behavior overall activity)	सामाजिक कौशल यान्त्रिक कौशल, गणितीय कौशल, भाषायी कौशल, उत्तेजना, क्रियान्वयन, नियंत्रण, समायोजन, स्वाभावीकरण

6) मूल्यांकन के प्रकार–
   i) मौखिक परीक्षा
   ii) लिखित परीक्षा साक्षात्कार / निराक्षण / अवलोकन / प्रायोगिक
   iii) रचनात्मक मूल्यांकन (Formulative Evaluation)
   iv) आंकलित मूल्यांकन (Summative Evaluation)
7) उत्तम परीक्षण / मूल्यांकन की विशेषताएं, शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन का संबंध।
8) प्रश्न–पत्र निर्माण प्रक्रिया
   i) योजना निर्माण, ब्लूप्रिन्ट, सम्पादन तथा अंक निर्धारण।
   ii) प्रश्नों के प्रकार (वस्तुनिष्ठ, अति लघुउत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घउत्तरीय)
   iii) शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार प्रश्नों के पक्ष (ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कौशल)
9) मूल्यांकन अभिलेखीकरण (संज्ञानात्मक तथा संज्ञान सहगामी पक्ष) सतत्, मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक मूल्यांकन, पुनर्बलन।
10) निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण।
11) क्रियात्मक शोध।
   i) शोध का अर्थ, प्रकार, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्त्व।
   ii) क्रियात्मक शोध के क्षेत्र।
   iii) क्रियात्मक शोध के चरण एवं प्रारूप निर्माण।
   iv) क्रियात्मक शोध उपकरण निर्माण।
   v) क्रियात्मक शोध का सम्पादन / अभिलेखीकरण।
12) शैक्षिक नवाचार
   i) शिक्षा में नवाचार का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व।
   ii) शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र शिक्षण अधिगम से सुधार हेतु स्थानीय समुदाय / परिवेश के संसाधनों की पहचान और उनका उपयोग कर मूल्यांकन, प्रार्थना स्थल की गतिविधि, पाठ्य सहगामी, क्रियाकलाप, सामुदायिक सहभागिता, विद्यालय प्रबन्ध, विषयगत कक्षा–शिक्षण समसामयिक दृष्टान्त, लैब एरिया।

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल / प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) प्रोजेक्ट कार्य के रूप में प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी द्वारा कम से कम दस बच्चों को चिन्हित कर इन्टर्नशिप के दौरान उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना और आए हुए परिवर्तन का मूल्यांकन करना।

2) प्रत्येक प्रशिक्षु दो शैक्षिक समस्याओं को चिह्नित कर उसका समाधान क्रियात्मक शोध अध्ययन के अनुसार आख्या सहित प्रस्तुत करें।
3) मूल्यांकन एवं शिक्षण–अधिगम को मॉडल / चार्ट में प्रस्तुत करना।
4) मूल्यांकन को प्रभावित कराने वाले कारकों पर चार्ट / मॉडल तैयार करना।
5) मापन एवं मूल्यांकन, परीक्षण एवं मापन में अन्तर स्पष्ट करने के लिए सामग्री / मॉडल / चार्ट तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार; लेखक– डॉ. सन्ध्या श्रीवास्तवा, अरुण कुमार राठौर, सूर्य प्रताप सिंह, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ; मूल्य–**150** / –

(Edu 06) समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

उद्देश्य

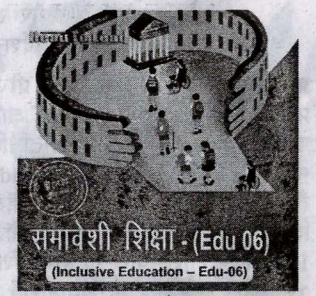

- प्रशिक्षुओं में समावेशी शिक्षा की समझ विकसित करना।
- समावेशी शिक्षा के प्रकार, प्रकृति एवं विविधा की जानकारी देना।
- विभिन्न प्रकार के बच्चों की शैक्षिक / भाषायी / प्राकृतिक समस्याओं से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को समस्त प्रकार के बच्चों की शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने, उनकी झिझक समाप्त करने में प्रशिक्षित करना।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा शिक्षण में उनका प्रयोग कर सकने में सक्षम बनाना।
- निर्देशन एवं परामर्श का अर्थ, महत्त्व एवं प्रक्रिया से अवगत करना।
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग / संस्थाओं से परिचित करना।
- विशिष्ट बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की सामग्री / आई.सी.टी. पर आधारित सामग्री / गेम के प्रयोग में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई.सी.टी. के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

पाठ्यक्रम (Syllabus)

1) **खण्ड 'अ'–विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे**
   i) शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण। यथा– अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक् / अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।

ii) समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ (Attitude)।
iii) समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी
iv) समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा–ब्रेललिपि आदि।

2) **खण्ड 'ब'–निर्देशन एवं परामर्श**
i) **समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श**–अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र (Scope)
ii) परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ
a) मनोविज्ञानशाला, उ.प्र., इलाहाबाद
b) मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र(मण्डल स्तर पर)
c) जिला चिकित्सालय
d) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षत डायट मेण्टर
e) पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
f) समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
g) सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
iii) बाल–अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्त्व

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) अपने आस–पास के समावेशित बच्चों की समस्या पता करके उनकी सूची बनाइए।
2) विभिन्न प्रकार के समावेशित बच्चों की प्रकृति को चार्ट/ मॉडल द्वारा प्रस्तुत करना।
3) विभिन्न प्रकार के समावेशन पर एक चार्ट/मॉडल तैयार करना।
4) विभिन्न प्रकार के कैलिपर्स का एलबम बनाना।
5) कम बोलने वाले बच्चों के लिए ऑडियो/वीडियो क्लिप तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– **समावेशी शिक्षा;** लेखक– डॉ. अमितेश कुमार शर्मा, डॉ. नवनीत कुमार तिवारी, सुदर्शन सिंह यादव, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ; मूल्य–**120**/–

(सेमेस्टर–3) विज्ञान

1) दैनिक जीवन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (परिवहन, चिकित्सा, जनसंचार, मनोरंजन, उद्योग,कृषि, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन, आधुनिक ईधन, दूरस्थ शिक्षा)। मानव समाज को विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी से लाभ व हानियां।
2) दाब तथा वैज्ञानिक यंत्र।
3) जीव जन्तुओं के वाह्य एवं आंतरिक अंगो के कार्यो में विविधता।
4) सूक्ष्म जीवों की दुनिया–संरचना तथा उपयोगिता, सूक्ष्म जीव–दोस्त या दुश्मन। भोज्य पदार्थो का परिरक्षण।
5) प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण एवं ब्रह्माण्ड जीवों का विलुप्तीकरण।
6) कार्बन एवं उसके यौगिक।
7) असंक्रामक रोग/अनियमित जीवन शैली से उत्पन्न रोग (मधुमेह, उच्चरक्तचाप, दिल की बीमारियां) कारण, निदान व उपचार।
8) पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन, जलीय पौधों एवं जानवरों का प्राकृतिक वास, मरूदभिद पौधों एवं जानवरों का प्राकृतिक वास। पर्यावरण असंतुलन में मानव का हस्ताक्षेप, वन्यजीव जन्तुओं का संरक्षण कार्यक्रम, ग्रीन हाउस गैसीय प्रभाव, ओजोन–क्षरण, धरती का बढ़ता तापमान।

9) **ऊष्मा, प्रकाश एवं ध्वनि**–ऊष्मा का मापन ,संचरण व संवहन। **प्रकाश**–स्त्रोत एवं संचरण, प्रकाश का परावर्तन व अपवर्तन, गोलीय, अवतल व उत्तल दपर्ण द्वारा प्रतिबिम्ब का बनाना। **ध्वनि**–संचरण, आवृत्ति व आवर्तकाल।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

विज्ञान के प्रत्येक पाठ से प्रशिक्षु शिक्षकों को उस पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) दाब एवं बल की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/खेल/टी.एल.एम. तैयार करें।
2) विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कारणों को चार्ट/मॉडल से प्रदर्शित करें।
3) ऊष्मा के संवहन पर मॉडल/प्रोजेक्ट/टी.एल.एम. तैयार करें।
4) ध्वनि एवं उसकी विभिन्न विशिष्टताओं को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/खेल/टी.एल.एम. तैयार करें।
5) कुछ पुष्पों के परागकणों की सूक्ष्मदर्शी संरचना का अध्ययन।
6) स्वनिर्मित वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा वैज्ञानिक घटनाओं का मॉडल तैयार करना, जैसे– टॉर्च का मॉडल।
7) संतुलित आहार का चार्ट/मॉडल बनाना।
8) सूक्ष्म जीवों की स्लाइड बनाकर अध्ययन करना। **जैसे**– दही के जीवाणु।
9) शहर के पार्क तथा गाँवों में जाकर पौधों का अध्ययन किया जाना, उन पर प्रोजेक्ट तैयार करना।
10) औषधीय पौधों की विशिष्टताएँ स्पष्ट करने हेतु चार्ट/मॉडल तैयार करें।
11) गतिविधि जैसे–एक गिलास को छेड़ो, दूसरा संगीत उत्पन्न करें। भाप से चलने वाला झूला। चित्र दिखे या न भी दिखे। गरम करते ही लिखावट उभर आये। सिंह की दहाड़ डिब्बे में आदि तैयार करें।

सन्दर्भित पुस्तक– **विज्ञान**; लेखक– डॉ. आर. के. पचौरी, कृषि राज भारती; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**180**/–

(सेमेस्टर–3) गणित

1) अनुपात, समानुपात, अनुलोम एवं प्रतिलोम समानुपात का अर्थ।
2) समानुपाती राशियों में बाह्य पदों एवं मध्य पदों के गुणनफल में सम्बन्ध।
3) घातांक की अवधारणा।
4) पूर्णांक तथ परिमेय संख्याओं को (धनात्मक आधार पर)घातांक रूप में लिखना।
5) सरल व चक्रवृद्धि ब्याज की संकल्पना।
6) सरल ब्याज, सूत्र तथा चक्रवृद्धि मिश्रधन का सूत्र एवं अनुप्रयोग।
7) बैंक की जानकारी, बैंक में खाता खोलना तथा खातों के प्रकार।
8) लघुगुणक की जानकारी, घातांक से लघुगुणक तथा इसका विलोम।
9) शेयर, लाभांश।
10) समुच्चय की संकल्पना, लिखने की विधियाँ, समुच्चय के प्रकार (सीमित, असीमित, एकल, रिक्त), समुच्चयों का संघ, अन्तर तथा सर्वनिष्ठ समुच्चय ज्ञात करना।
11) चर राशियों का गुणनखण्ड, दो वर्गो के अन्तर के रूप के व्यंजकों का गुणनखण्ड, द्विघातीय त्रिपदीय व्यंजकों का गुणनखण्ड।

12) बीजगणितीय व्यंजको में एकपदीय तथा द्विपदीय व्यंजकों से भाग। अवर्गीकृत आंकड़ों के माध्य।
13) आयतन एवं धारिता की संकल्पना तथा इकाइयाँ।
14) घन, घनाभ की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ।
15) वृत्तखण्ड एवं त्रिज्या खण्ड की अवधारणा।
16) वृत्त खण्ड का कोण।
17) वृत्त के चाप द्वारा वृत्त के केन्द्र तथा परिधि पर बने कोणों का सम्बोध एवं इनका पारस्परिक सम्बन्ध।
18) वृत्त की छेदक रेखा, स्पर्श रेखा तथा स्पर्श बिन्दु की अवधारणा।
19) वृत्त पर दिये हुये बिन्दु से स्पर्श रेखा खींचना।

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को गणित के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल / प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) गणितीय मनोरंजन के कोई पाँच खेल–सामग्री का निर्माण करना।
2) अनुपात, समानुपात, अनुलोम एवं प्रतिलोम समानुपात के अर्थ को समझाने हेतु मॉडल / सामग्री विकसित करना।
3) समानुपाती राशियों में बाह्य पदों एवं मध्य पदों के गुणनफल को स्पष्ट करने हेतु सामग्री बनाना।
4) घातांक की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु उदाहरण एवं सामग्री निर्मित करना।
5) सरल व चक्रवृद्धि ब्याज, मिश्रधन की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
6) बैंकों की जानकरी, बैंक में खाता खोलना आदि के लिए खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
7) शेयर लाभांश पर खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
8) समुच्चय की संकल्पना, समुच्चय के प्रकार समुच्चयों का संघ आदि स्पष्ट करने के लिए खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
9) चर राशियों के गुणनखण्ड की संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।

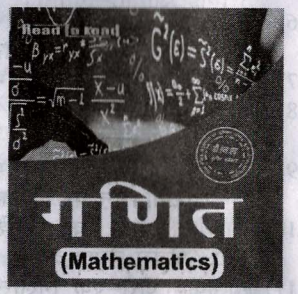

10) अवर्गीकृत आंकड़ो के मध्य / बारम्बारता / माध्यिका को स्पष्ट करने हेतु खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
11) घन, घनाभ की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ को स्पष्ट करने हेतु खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।
12) वृत्तखण्ड, स्पर्शरेखा, चाप, त्रिज्या आदि की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु खेल / मॉडल / प्रोजेक्ट / सामग्री बनाना।

सन्दर्भित पुस्तक– **गणित**; लेखक– डॉ. रचित कुमार, दीपेश दुबे; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**125** / –

(सेमेस्टर–3) सामाजिक अध्ययन

1) भारत में मुगल साम्राज्य–बाबर, हुमायूँ व उसकी स्वदेश को पुनः वापसी–शेरशाह का उदय, अकबर, जहाँगीर, औरंगजेब व मुगल साम्राज्य का पतन।
2) मुगलों का प्रशासनिक सामाजिक, सांस्कृतिक, कलात्मक एवं आर्थिक क्षेत्र में योगदान।
3) मराठा शक्ति का अभ्युदय–शिवजी, अठ्ठारहवीं शताब्दी में भारत की स्थिति।

4) भारत में यूरोपीय शक्तियों का प्रवेश एवं ईस्ट इंडिया की स्थापना, पुर्तगाल, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी।
5) भारत की सत्ता के लिए यूरोपीय शक्तियों में संघर्ष–प्रथम, द्वितीय व तृतीय कर्नाटक युद्ध, डूप्ले की नीति, प्लासी का युद्ध, बक्सर का युद्ध, इलाहाबाद की संधि।
6) भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना–राबर्ट क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्ज, लार्ड कार्नवालिस, लार्ड वेलेजली, लार्ड विलियम बेंटिक, लार्ड डलहौजी।
7) जीव मण्डल–प्राकृतिक प्रदेश एवं जनजीवन (शीत कटिबन्धीय प्रदेश, उष्ण कटिबन्धीय प्रदेश, शीतोषण कटिबन्धीय प्रदेश जलवायु, वनस्पति, जीवजन्तु, मानव जीवन), उद्योग धंधे।
8) भूखण्डों का विभाजन–एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका–सामान्य परिचय, जनसंख्या का विस्तार एवं घटक।
9) विश्व में – प्राकृतिक संसाधन, यातायात तथा संचार के साधन, खनिज सम्पदा।
10) मनुष्य की आवश्यकता तथा उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्न की दिशा में प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग एवं संरक्षण।
11) हमारा भारत–प्राकृतिक एवं राजनैतिक इकाईयां, हमारी प्राकृतिक सम्पदा और उनका सदुपयोग।
12) हमारी खनिज सम्पदा, शक्ति के साधन, कृषि और सिंचाई, आयात–निर्यात।
13) सरकार के अंग–शक्ति का पृथक्करण, शक्तियों का बंटवारा–केन्द्र सूची, राज्य सूची, समवर्ती सूची के प्रमुख विषय।

14) संसद–
   i) **लोकसभा**–सदस्यों की योग्यताएं, कार्यकाल, पदाधिकारी, अधिवेशन व कार्य।
   ii) **राज्यसभा**–सदस्यों की योग्यताएं, कार्यकाल, पदाधिकारी, अधिवेशन व कार्य।
   iii) **राष्ट्रपति**–चुनाव, कार्यकाल, महाभियोग, शक्तियाँ, मंत्रिमंडल।
   iv) **कानून बनाने की प्रक्रिया**–साधारण बहुमत, विशेष बहुमत।
15) **कार्यपालिका–प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद्**–चुनाव कार्य, संसद का मंत्रिपरिषद पर नियंत्रण।
16) **न्यायपालिका**–न्यायालय के प्रकार
   i) जनपद स्तरीय न्यायालय
   ii) उच्च न्यायालय
   iii) उच्चम न्यायालय
17) न्यायाधीशों की योग्याताएं, कार्यकाल
   i) उच्चतम न्यायालय के अधिकार
   ii) लोक अदालत
   iii) जनहित वाद
18) भारतीय वित्त व्यवस्था व बजट–कर व उसके प्रकार, केन्द्र व राज्यों के मध्य करों का बंटवारा, केन्द्र सरकार की आय–व्यय के स्त्रोत, राज्य सरकार की आय–व्यय की मदें, सरकार द्वारा शिक्षा के दृष्टिकोण से बजट–2013–14 में रखे गये बिन्दु।
19) पंचवर्षीय योजना–क्या, पिछली 11वीं पंचवर्षीय योजनाओं के मुख्य बिन्दु, वर्तमान में 12वीं पंचवर्षीय योजना–विशेषकार शिक्षा के दृष्टिकोण से।
20) भारतीय आधुनिक बैंकिग व्यवस्था–बैंक व उनके प्रकार भारतीय रिजर्व बैंक, स्टेट बैंक, भूमि विकास बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, नाबार्ड, ई–बैंकिग का राष्ट्रीयकरण व निजीकरण, आधुनिक अर्थव्यवस्था में बैंको का महत्त्व।

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल / प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) सल्तनत एवं मुगल स्थापत्य कला की तुलनात्मक स्थिति स्पष्ट करने हेतु मॉडल / चार्ट तैयार करें।
2) ग्राण्ड ट्रंक रोड, कृषि, खनिज, प्रमुख सड़क मार्ग प्रमुख रेलमार्ग, प्रमुख जलमार्ग को मानचित्र / मॉडल में दर्शाएँ।
3) यूरोपीय शक्तियों के आगमन के फलस्वरूप हुए व्यापारिक मार्गो की खोज व विभिन्न आविष्कारों पर एक लेख लिखे।
4) भारत में अंग्रेजो के काल में हुए सुधार व विकास कार्यो पर एक समालोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।
5) ग्लोब एवं विश्व के प्राकृतिक प्रदेशो को मॉडल / मानचित्र पर दर्शाएँ।
6) केन्द्र सूची, राज्य सूची व समवर्ती सूची पर एक चार्ट तैयार करें।
7) विश्व के मानचित्र पर विकसित देश, विकासशील देश(प्रमुख) देशों को दर्शाएं।
8) केन्द्र व राज्य सरकार की आय व्यय के स्त्रोत को चार्ट द्वारा प्रदर्शित करें।
9) मुगल साम्राज्य सभी शासकों का काल क्रमानुसार फोटो एलबम बनाएं।
10) मुगल काल से लेकर अंग्रेजों के आवागमन तक हुए प्रमुख युद्धों पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
11) वर्तमान की डाक व्यवस्था व शेरशाह की डाक व्यवस्था में भिन्नता पर रिपोर्ट तैयार करें।
12) भारत के सभी राष्ट्रपतियों के नामों व कार्यकाल को सूचीबद्ध करते हुए फोटो एलबम बनायें।
13) पिछले दस वर्षों की साक्षरता स्थिति पर एक पॉवर प्वाइंट प्रजेन्टेशन तैयार करें।
14) किसी राष्ट्रीयकृत बैंक / निजी बैंक का भ्रमण कर उसमें चल रही बैंकिग योजनाओं पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।

सन्दर्भित पुस्तक– सामाजिक अध्ययन; लेखक– डॉ. छवि गर्ग, डॉ. महेश कुमार, रंजना वार्ष्णेय; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**180** / –

(सेमेस्टर–3) हिन्दी

1) पाठ्यपुस्तक में आये प्रमुख कवियों और लेखकों का सामान्य परिचय।
2) श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग।
3) राष्ट्रीय पर्वों, मेला, त्योहार जैसे विषयों पर अपने शब्दों में गद्य अथवा पद्य में स्वतंत्र लेखन।
4) कर्ता कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन, तत्सम, तद्भव देशज रूपों का परिचय, सरल संयुक्त व मिश्रित वाक्य, वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग।
5) पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यपुस्तक को पढ़कर समझना।
6) औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपयुक्त भाषा का प्रयोग करना।

7) अधिगम प्रतिफल का मूल्यांकन, शिक्षण प्रक्रिया एवं बच्चों के क्रियाकलापों के साथ, प्रथम दो कक्षाओं में मौलिक और प्रेक्षात्मक मूल्यांकन तथा कक्षा–3 से आगे की कक्षाओं में अन्य तकनीकों के पूरकरूप में लिखित परीक्षा का संचालन।

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः सम्बन्धों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–(वीडियो / आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल / प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) आत्मकथा एवं यात्रा वृतान्त का मौलिक लेखन।
2) विभिन्न विराम चिन्हों वाले अनुच्छेदों का निर्माण।
3) मुहावरों एवं लोकोक्तियों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की सामग्री ।
4) शब्दों की उत्पत्ति पर मॉडल / प्रोजेक्ट।
5) एक ही विषय पर लिखी गयी कविताओं के कवियों का संग्रह तैयार करना।
6) समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं से कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी सामग्री का संकलन तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– हिन्दी; लेखक– डॉ. सुधांशु अरुणाभ मिश्रा, डॉ. सुनील कुमार शर्मा, अनिल कुमार निम; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य– 100 / –

(सेमेस्टर–3) संस्कृत

1) संस्कृत वर्ण परिचय व उनके ध्वनि उच्चारण स्थान का ज्ञान।
2) **सन्धि प्रकरण**–प्रकार, सूत्र, नियम निर्देश सहित सन्धि विग्रह एवं सन्धि करने का ज्ञान।
3) **समास प्रकरण**–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुब्रीहि व द्वन्द्व समास का ज्ञान।
4) **शब्द रूप**–शब्द प्रकार, वचन व विभक्तियों का ज्ञान।
5) **धातुरूप**–लट्, लोट्, लड., विधिलिङ् व लृटलकार का पुरुष व वचन सहित ज्ञान।
6) कारक विभिक्त एवं चिन्ह का ज्ञान।
7) सुभाषित श्लोकों का सस्वर पाठ व अनुकरण वाचन।
8) पाठ्यपुस्तक के अंशों का सुलेख, अनुलेख, श्रुतलेख एवं सरल अनुवाद।
9) संवाद पाठों पर आधारित संस्कृत में छोटे–छोटे वाक्यों की रचना करने का ज्ञान।
10) हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।
11) उपसर्ग, प्रत्यय एवं वाच्य परिवर्तन का ज्ञान।
12) एक से पचास तक संस्कृत संख्याओं का ज्ञान।
13) **संभाव्य शिक्षण विधाएँ**–शिक्षक प्रशिक्षण में क्रियाकलाप आधारित शिक्षण–अधिगम का ज्ञान, मॉडल, गेम, वीडियो क्लिप, ऑडियो क्लिप, प्रयोग तैयार करके, श्यामपट्ट कार्य के द्वारा, शब्द पट्टिका, चार्ट, कठिन शब्दों के चार्ट व उच्चारणाभ्यास के द्वारा अभिनय व प्रश्नोत्तर, प्रशिक्षक–शिक्षक सहभागिता आदि के द्वारा प्रभावी शिक्षण के सम्भव है।

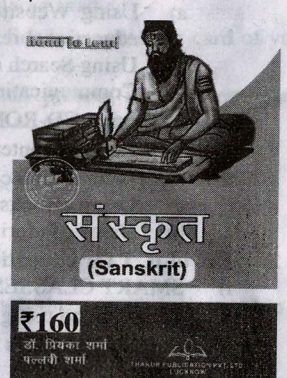

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को संस्कृत के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है।

शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) संस्कृत विषय की कठिनाईयों से सम्बन्धित एक क्रियात्मक शोध।
2) स्वनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण व प्रयोग।
3) संस्कृत में निबंध/पत्र लेखन।
4) संस्कृत में वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा अभिलेखीकरण।
5) विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों/कृतियों/रचनाओं पर चार्ट/प्रस्तुतीकरण तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– **संस्कृत**; लेखक– डॉ. प्रियंका शर्मा, पल्लवी शर्मा; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य– 160/–

(सेमेस्टर–3) कम्पयूटर शिक्षा

I.C.T. (Information and Communication Technology)

1) Introduction to ICT
   i) Introduction and Basic Concepts
   ii) Application and Benefits of ICT in education
   iii) Scope of ICT in education

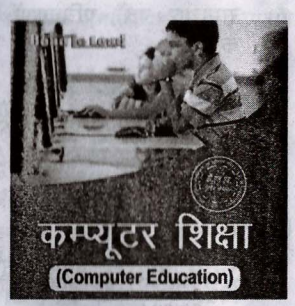

I.C.T. in Education and Studies
For Teachers

1) **Use of ICT for knowledge enhancement**
   i) Accessing Internet
      a) Using Websites (Wikipedia, open digital educational resources, etc.)
      b) Using Search engines
      c) Communicating with Experts
   ii) Accessing CD-ROMs and DVDs
   Using digital content
   iii) Accessing digital content
      a) Using eBooks
      b) Using eTutorials and training videos (YouTube etc.)
2) **Use of ICT for education delivery**
   i) SMART CLASSES and Digital Blackboard
   ii) Creating and using Slide-Presentations with Projectors
   iii) Educational A-Vs (Audio-Videos) Modules (Animated or Non-Animated or both)
   iv) Using online elabs, eLibraries and eMuseum in classes
   v) Delivering Distance Education through Digital/Online services ODL mode
      a) EDUSAT
      b) Classes through Teleconferencing and Video conferencing
      c) Prasar Bharti's education services
         - Radio Service ('Gyanvani' Radio Station)
         - Television Service (Doordarshan's 'GyanDarshan' Chanel)
      d) Query handling through Chat applications and Email
      e) eTutions through Online Web-Portals
      f) Moocs, DER etc.
3) **For Students**
   i) Use of ICT for knowledge enhancement
   ii) Developing eContent through Internet
   iii) Digital Project Development
   iv) Accessing education through Radio and TV services

   v) Doubt clearing through online chats with experts
   vi) Online Tests through Exam Web Portals (MeritNation.com etc.)
   vii) eTutions
   viii) Accessing various competitive Exams information online
   ix) Job Search and Enquiries through Job Portals (Naukri.com, Monster.com etc.)

I.C.T. in School Management

1) **Using Online services / tools**
   i) Official Website for communication between school and students (and their guardians), School staff etc.
   ii) Online complaint portal for queries and problem eradication
2) **Using School Management Software application/ tools**
   i) Digitisation of School Data for transparency (Attendance, Books, Uniforms, Test Scores etc.)
   ii) Data mining for effective decision making
3) **ICT in office work**
   i) Using Office packages for record maintenance and documentation
   ii) Exchange of Emails for quick and cheap communication
   iii) Teleconferencing and Video conferencing to save time and money

Experimental/Sessional Work

1) Create a Web page which contains information about our country, State, City or Institution. Webpage should include some pictures and a Map.
2) Visit any website which offers free greeting cards. Send any greeting card of your choice to your teachers.
3) Create a PowerPoint Presentation on any type and present it using projectors Practice of the theoretical aspects, in the Computer Lab of the Institution.
4) Slide Presentations- 08
   Minimum of 7-10 slides each based on elementary school text book etc.
5) Project work
   A ten page project work contains Text and Graphics (Per Trainee)
6) School records digitisation
   i) Use any office package to maintain digital records throughout the internship
   ii) It must contain
      a) Daily Attendance (Students and Self)
      b) Students Profile
      c) Digital Monthly summary (Create and Upload on Social Pages of School/DIET)
      d) Internship related photograph (1 in a week) (Upload on Social Pages of School/DIET)
      e) Presentation on School Analysis
7) Inspection of the computers installed in the Computer centres of the Upper Primary Computer Labs of our District and students will also install necessary softwares.
8) Create one's personal e-mail account and send an attachment to the e-mail account of the institution (Taking full care of the e-mail etiquette)

Practice of the theoretical aspects in the Computer Lab of the Institution.

सन्दर्भित पुस्तक– **कम्प्यूटर शिक्षा**; लेखक– डॉ. विनोद कुमार जैन, डॉ. भेदपाल गंगवार, मनीष स्वामी; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**120**/–

सेमेस्टर–4

(Edu 07) आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन तथा संख्यापूर्व सम्बोधों/क्षमताओं का विकास

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को भाषागत दक्षताओं सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना आदि का विकास करने हेतु तैयार करना।
- ध्वनियों के पारस्परिक अन्तर को समझने एवं शुद्ध उच्चारण कराने की क्षमता का विकास करना।
- भावाभिव्यक्ति की क्षमता के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों को कराने की दक्षता का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं को परस्पर संवाद, सरल वाक्य रचना करने की क्षमता का विकास करने हेतु गतिविधियों के आयोजन में दक्ष करना।
- प्रशिक्षुओं को गणित में संख्यापूर्व अभ्यासों के चयन एवं प्रयोग में दक्ष करना।
- प्रशिक्षु को भाषा एवं गणित विषय में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई.सी.टी. के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

पाठ्यक्रम (Syllabus)

1) पठन एवं लेखन का अर्थ एवं महत्त्व।
2) उद्देश्य।
3) उपयोगिता।
4) वर्ण, शब्द, वाक्य।
5) ध्वनि का अध्ययन।
6) स्वरो,व्यंजनों तथा व्यंजन समूहों को सुनकर समझना।
7) दिए गए निर्देश, सन्देश, सुनाये गये वर्णन, कविता, कहानियों, लोकगीतों आदि में निहित भावों तथा विचारों को सुनकर समझना।
8) हिन्दी/अंग्रेजी की सभी ध्वनियो, स्वरों, व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण।
9) लिपि की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों को पहचानकर शुद्ध रूप में पढ़ना।
10) पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा विस्मय सूचक चिन्हों को पहचानते हुए एवं विषयवस्तु को अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना।
11) विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों वाले शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना।
12) लिपि संकेतों, स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्त वर्णों को सुडौल तथा आकर्षक रूप में लिखना।

13) अनुनासिक ध्वनियों के लिपि संकेतों को शुद्धता के साथ लिखना।
14) संख्यापूर्व तैयारी एवं सम्बोध।
15) 1 से 9 तक की संख्याओं को वस्तुचित्रों की सहयता से गिनना, पढ़ना, लिखना।
16) संख्याओं को क्रमबद्ध करना।
17) गणितीय संक्रियायें–जोड़ना, घटना एवं शून्य का ज्ञान।
18) इकाई, दहाई तथा सैकड़े का ज्ञान।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन क्षमता का विकास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) विभिन्न प्रकार के फन–गेम्स तैयार करना।
2) विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल तैयार करना।
3) विभिन्न प्रकार के वर्ण/शब्द के खेल तैयार करना।
4) गणित पर आधारित सरल खेल तैयार करना।
5) विभिन्न खेलों पर नाटक तैयार करना।
6) तेजी से पढ़ने/लिखने के लिए गतिविधियाँ तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– आरम्भिक स्तर पर भाषा के पाठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास ; लेखक– डॉ. दिनेश उपाध्याय, डॉ. अंजू सक्सेना, डॉ. एम. पाल, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ; मूल्य–**120**/–

(Edu 08) शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

उद्देश्य

- विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व की जानकारी देना।
- विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- विद्यालय प्रबंधन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका से अवगत कराना।
- विद्यालयीय व्यवस्था को प्रभावी बनाने का कौशल प्राप्त करने में सक्षम बनाना।
- विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र जैसे–भौतिक, मानवीय, वित्तीय, शैक्षणिक, समय–सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन आदि की जानकारी देना।
- विद्यालयीय क्रियाकलापों के सफलतापूर्वक सम्पादन में प्रशिक्षित करना।
- बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972, बेसिक शिक्षा नियमावली एवं टी.ई.टी. नियमावली की जानकारी देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई.सी.टी. के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

पाठ्यक्रम (Syllabus) - शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

1) शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशासन

i) संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व।

ii) विद्यालय प्रबन्धन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व।

iii) विद्यालय प्रबन्धन के क्षेत्र

iv) भौतिक संसाधनों का प्रबन्धन (विद्यालय, भवन फर्नीचर, शैक्षिक उपकरण, साज–सज्जा, पेयजल, शौचालय)।

v) मानवीय संसाधनों का प्रबन्धन
   a) शिक्षक
   b) बच्चे
   c) समुदाय (ग्राम शिक्षा समिति, विद्यालय प्रबन्धन समिति, शिक्षक अभिभावक संघ, मातृशिक्षक संघ महिला प्रेरक दल)

vi) वित्तीय प्रबन्धन (विद्यालय अनुदान, टी.एल.एम. ग्रान्ट, विद्यालय को समुदाय से प्राप्त धन, विद्यालय की सम्पत्ति से अर्जित धन, ग्राम पंचायत निधि से/जनप्रतिनिधियों से प्राप्त अनुदान)।

vii) शैक्षिक प्रबन्धन (कक्षा–कक्ष प्रबन्धन, शिक्षण अधिगम सामग्री प्रबन्धन, लर्निंग कार्नर एवं पुस्तकालय प्रबन्धन, पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, शिक्षक संदर्शिकाएँ, शब्दकोष का प्रयोग एवं प्रबन्धन)

viii) समय प्रबन्धन (समय सारिणी का निर्माण व प्रयोग)।
   a) एक या दो अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय–सारिणी।
   b) तीन या चार अध्यापकों वाले विद्यालयों हेतु समय–सारिणी।
   c) पाँच अध्यापक वाले विद्यालय हेतु समय सारिणी।

ix) पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का प्रबंधन– खेलकूद, शैक्षिक कार्यक्रम (वाद–विवाद, निबन्ध आदि, सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय पर्व, शैक्षिक भ्रमण, बागवानी, सत्रांत समारोह)।

x) सूचनाओं एवं अभिलेखों का प्रबन्धन (विद्यालयीय सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण एवं अभिलेखीकरण)।

xi) विद्यालय अभिलेख के प्रकार–

अध्यापक उपस्थिति पंजिका	छात्र उपस्थिति पंजिका	पत्र व्यवहार पंजिका	एस.एम.सी. पंजिका	एस.एम.सी. आय–व्यय पंजिका	ग्राम शिक्षा निधि (आय–व्यय) पंजिका
ग्राम शिक्षा समिति बैठक पंजिका	मातृ शिक्षक संघ पंजिका	अभिभावक शिक्षक संघ पंजिका	शिक्षण अधिगम सामग्री पंजिका	स्टॉक पंजिका, निःशुल्क पुस्तक वितरण पंजिका	निःशुल्क गणवेष वितरण पंजिका
बाल गणना/परिवार सर्वेक्षण पंजिका	बालकों के जन्मदिन की पंजिका	स्वास्थ्य परीक्षण पंजिका	छात्रवृत्ति वितरण पंजिका	अनुश्रवण/निरीक्षण पंजिका, शिक्षक डायरी, बुक–बैंक पंजिका	एम.डी.एम. कनवर्जन कॉस्ट एवं खाद्य पंजिका
कोटेशन रख–रखाव पंजिका	टेण्डर प्रक्रिया सम्बन्धी पंजिका	आवागमन पंजिका	आदेश पंजिका	एम.डी.एम.वितरण पंजिका	

xii) आपदा प्रबन्धन।

xiii) प्रभावपूर्ण विद्यालय प्रबन्धन के सिद्धान्त– प्रजातान्त्रिक प्रबन्ध, आंकड़ों का वैज्ञानिक संग्रहण, लक्ष्य निर्धारण तथा योजना, आवधिक निरीक्षण, लचीलापन आदि

xiv) विद्यालय प्रबन्धन में विभिन्न अभिकर्मियों की भूमिका–
   a) प्रधानाध्यापक, शिक्षक एवं बच्चों (बाल सरकार) की भूमिका।
   b) समुदाय, अभिभावक (ग्राम शिक्षा समिति, शिक्षक अभिभावक संघ, मातृशिक्षक संघ, मीना मंच) की भूमिका।
   c) पर्यवेक्षण तन्त्र की भूमिका–(ब्लॉक संसाधन केन्द्र के समन्वयक, न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र के प्रभारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी, डायट मेन्टर, जिला समन्वयक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं उच्च अधिकारियों की भूमिका)।

2) प्रारम्भिक शिक्षा के विकास में संलग्न विभिन्न अभिकरण एवं उनकी भूमिका

i) राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण–
   a) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)
   b) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE)
   c) राष्ट्रीय शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA)
   d) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)
   e) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS)

ii) राज्य स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण–
   a) राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
   b) राज्य हिन्दी संस्थान
   c) मनोविज्ञानशाला
   d) परीक्षा नियामक प्राधिकारी आदि

iii) जिला स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण–
   a) जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
   b) जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदि

iv) स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाले अभिकरण

उदाहरण–
   a) खण्ड शिक्षा अधिकारी
   b) एन.पी.आर.सी.

3) प्राथमिक शिक्षा का आधारभूत ढाँचा

उदाहरण–

i) बेसिक शिक्षा परिषद का गठन का कार्य

ii) बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972

iii) बेसिक अध्यापक शिक्षा सेवा नियमावली

iv) टी.ई.टी. नियमावली

v) सूचना का अधिकार अधिनियम– 2005 के सामान्य नियम व प्रावधान तथा विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली सूचनाओं की जानकारी।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किए जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट

की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) प्रशिक्षुओं द्वारा प्राथमिक शिक्षा पर कार्य करने वाले विभिन्न अभिकरणों में से प्रत्येक स्तर पर कार्य करने वाले एक–एक अभिकरण पर अध्ययन कर विस्तृत आख्या या रिपोर्ट तैयार करना।
2) विद्यालय प्रबन्धन के अंगों पर माडॅल तैयार करना।
3) विद्यालय की विकास योजना तथा उसके शैक्षिक एवं वित्तीय उपाशय पर प्रोजेक्ट तैयार करना।
4) कक्षा प्रबन्धन के अंगो एवं योजना पर मॉडल तैयार करना।
5) विभिन्न प्रकार की विद्यालयीय समितियाँ एवं उनके कार्यो व दायित्वों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन; लेखक– डॉ. आशुतोष कुमार शुक्ल, डॉ. सर्वेश कुमार यादव, नीता वरुण, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ; मूल्य–**180**/–

(सेमेस्टर–4) विज्ञान

1) जैव विकास, पारिस्थितिकीय तंत्र व उसके घटक (जैविक व अजैविक घटक), जैविक घटकों में खाद्य–श्रृंखला, खाद्य जाल पारिस्थतिकीय पिरामिड।
2) खनिज एवं धातु अयस्यक, धातु का निष्कर्षण धातु तथा अधातु में अन्तर।
3) आवर्त सारिणी की सामान्य जानकारी–विद्युत ऋणात्मकता।
4) स्थिर विद्युत आवेश–प्रकार, आवेश के सुचालक व कुचालक।
   i) विद्युत धारा व इसके उपयोग।
   ii) चुम्बकत्व–चुम्बक के गुण, उपयोग, पृथ्वी का चुम्बकीय व्यवहार, विद्युत चुम्बक।
5) रक्त की संरचना, रक्त वर्ग, रक्त बैंक, रक्त के आदान–प्रदान में सावधानियां।
6) रक्त पीड़ित सामान्य रोगों की जानकारियां।
7) एड्स व हेपेटाइटिस–बी की सामान्य जानकारी, कारण लक्षण व बचाव के उपायों से अवगत कराना।
8) सुरक्षा एवं प्राथमिक उपचार।

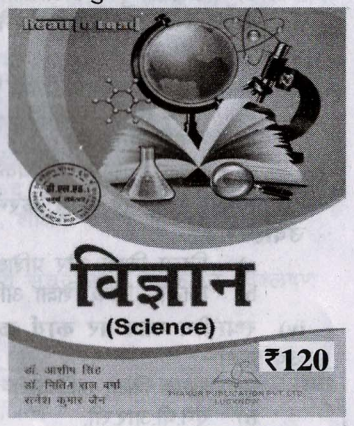

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

विज्ञान के प्रत्येक पाठ से प्रशिक्षु शिक्षकों को उस पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) एमीटर तथा वोल्टमीटर का अन्तर स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रयोग तैयार करें।
2) ओम के नियम तथा प्रतिरोध मापन पर प्रयोग करें।
3) प्याज की झिल्ली की स्लाइड्स बनाकर सूक्ष्मदर्शी के माध्यम से अध्ययन कर रिपोर्ट तैयार करें।
4) परिवेश में जाकर खाद्य–श्रृंखला एवं खाद्य जाल पर अध्ययन कर चार्ट/मॉडल तैयार करें।
5) विद्युत आकर्षण एवं प्रतिकर्षण का प्रयोग–प्रदर्शन हेतु मॉडल तैयार करें।

6) विद्युत उपकरणों के माध्यम से चित्र या कोई आकृति बनाए।
7) पदार्थो/विद्युत के चुम्बकीय गुण को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/प्रोजेक्ट/चार्ट/टी.एल.एम. तैयार करें।
8) रक्त की संरचना एवं प्रकार को स्पष्ट करने हेतु चार्ट/मॉडल/सामग्री/ टी.एल.एम. तैयार करें।

सन्दर्भित पुस्तक– **विज्ञान**; लेखक– डॉ. आशीष सिंह, डॉ. नितिन राज वर्मा; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**120**/–

(सेमेस्टर–4) गणित

1) करणी, करणीगत राशि, करणी चिन्ह तथा करणी का घातांक।
2) वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल की अवधारणा।
3) किसी संख्या का वर्गमूल तथा दशमलव संख्या का वर्गमूल ज्ञात करना।
4) पूर्ण घन संख्याओं तथा पूर्ण घन दशमलव संख्याओं का घनमूल।
5) किसी सिक्के के उछालने पर चित या पट के ऊपर पड़ने की सम्भावना का सम्बोध।
6) किसी पासे को उछालने पर किसी एक फलक के ऊपर आने की संभावना।
7) दो या तीन सिक्कों को एक साथ फेंकने का प्रयोग।
8) दो पासों को एक साथ फेंकने का प्रयोग।
9) सम्भावनाओं का दैनिक जीवन से सम्बन्ध।
10) अवर्गीकृत आँकड़ों की माध्यिका एवं बहुलक की गणना।
11) त्रिकोणमितीय अनुपातों की अवधारणा तथा 0°, 30°, 45°, 60° तथा 90° के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात ज्ञात करना।
12) लम्बवृत्तीय बेलन तथा लम्बवृत्तीय शंकु की अवधारणा तथा इनका आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ।
13) वर्ग समीकरण, $x^2=k$ के रूप वाले समीकरण का हल। $ax^2+bx+c=0$ का हल (गुणनखण्ड विधि से)
14) दो अज्ञात राशि वाले रेखीय समीकरण (युगपत् समीकरण)
15) समलम्ब का क्षेत्रफल
16) वृत्त की परिधि एवं व्यास में सम्बन्ध
17) वृत्त का क्षेत्रफल
18) चतुर्भुज का अर्थ,इसके विकर्ण, संलग्न भुजाएं सम्मुख भुजाएं, सम्मुख तथा बाह्य कोणों का बोध।
19) चतुर्भुज के प्रकार–वर्ग, आयत समचतुर्भुज, समान्तर चतुर्भुज एवं समलम्ब। इनके प्रगुणों का प्रयोगिक सत्यापन।
20) चक्रीय चतुर्भुज तथा चक्रीय बिन्दु की अवधारणा।

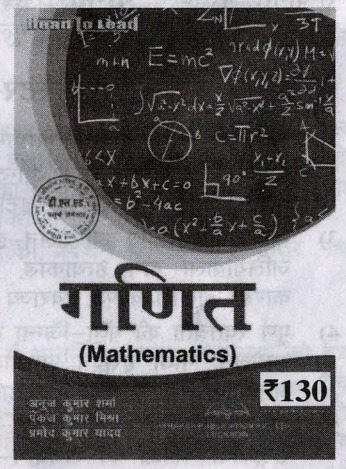

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को गणित के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जाएगा। तैयार किए जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) करणी, करणीगत राशि, करणी चिह्न तथा करणी के घातांक को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।

2) वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
3) किसी संख्या का वर्गमूल तथा दशमलव संख्या का वर्गमूल ज्ञात करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
4) पूर्ण घन संख्याओं तथा पूर्ण घन दशमलव संख्याओं के घनमूल को ज्ञात करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
5) किसी सिक्के के उछालने पर चित या पट के ऊपर पड़ने की सम्भावना को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
6) पासा (Dice) के खेल के माध्यम से प्रायिकता स्पष्ट करने हेतु खेल तैयार करना।
7) अवर्गीकृत आँकड़ों की माध्यिका, बारम्बारता एवं बहुलक की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
8) बेलन, शंकु, पिरामिड के गुणों को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री का निर्माण करना।
9) चतुर्भुज, आयत, समचतुर्भुज, समलम्ब, के विभेदों एवं गुणों को स्पष्ट करने हेतु खेल/मॉडल/सामग्री निर्मित करना।

सन्दर्भित पुस्तक– **गणित**; लेखक– अनुज कुमार शर्मा, पंकज कुमार मिश्रा; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**130/–**

(सेमेस्टर–4) सामाजिक अध्ययन

1) 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु प्रयास।
2) धार्मिक तथा समाज सुधार आन्दोलन–ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, मुस्लिम धार्मिक आन्दोलन (सर सैय्यद अहमद खॉ)।
3) भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन–इंडियन नेशलन कांग्रेस का जन्म, बंगभंग, रौलट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड, खिलाफत आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, चौरी–चौरा काण्ड, काकोरी काण्ड, स्वराज्य दल, साइमन कमीशन, बारदौली सत्याग्रह, नेहरू रिपार्ट।
4) पूर्ण स्वतंत्रता की माँग–जिन्ना की चौदह शर्ते, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, प्रथम गोलमेज सम्मेलन, गाँधी इरविन समझौता, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन, पूना पैक्ट, भारत छोड़ो आन्दोलन तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति।
5) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख उदार एवं उग्र राष्ट्रवादी नेताओं का योगदान–महात्मा गाँधी जवाहर लाल नेहरू, गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, सुभाष चन्द्र बोस, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय।
6) जलवायु एवं मौसम में अन्तर एवं जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्त्व।
7) भारत के प्राकृतिक प्रदेश–बनावट, जनजीवन, कृषि, उद्योग–धन्धे, प्रमुख राज्य व नगर।
8) उत्तर प्रदेश के प्राकृतिक प्रदेश–विस्तार, प्रमुख नगर, जनजीवन, उत्तर प्रदेश की अनुसूचित जातियां एवं जनजातियां।
9) उत्तर प्रदेश की खनिज सम्पदा, शक्ति के साधन, कृषि और सिंचाई।

10) उत्तर प्रदेश के प्रमुख आयात–निर्यात एवं उसका हमारी अर्थव्यवस्था का प्रभाव।
11) **उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत**–पुरातात्विक विरासत, कलाएं मेले व त्यौहार, तीर्थस्थान, विरासत का संरक्षण।

12) **पर्यावरण प्रदूषण**–अर्थ, प्रकार व रोकथाम।
13) **संयुक्त राष्ट्रसंघ**–गठन, अंग, कार्य।
14) जनगणना।
15) नागरिक सुरक्षा।
16) **सरकार की विभिन्न जनहित योजनाएं**–भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्तमान में चलायी जा रही स्वरोजगार योजनाएँ।
17) गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.)।
18) विविधता में एकता, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक।
19) आतंकवाद, साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद–अनुसूचित जाति एवं जनजातिय ों के संरक्षण हेतु संवैधानिक प्राविधान, भारत के शान्ति प्रयास–गुट निरपेक्षता की नीति, पंचशील के सिद्धान्त, संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से भारत के शान्ति प्रयास।
20) भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियां–
    i) गरीबी–जनसंख्या वृद्धि–जनसंख्या का घनत्व, माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास में बाधक, भारत में जनांकिकीय प्रवृत्तियाँ, जन्म एवं मृत्यु दर, लिंग अनुपात, भारत में गरीबी रेखा जनसंख्या नीति।
    ii) भारत में गरीबी के कारण, भारत में गरीब रेखा, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम।
    iii) **बेरोजगारी**–प्रकार, बेरोजगारी उन्मूलन पर वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित योजनाएं।
    iv) साक्षरता दर।
21) **भारत में खाद्य सुरक्षा एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली**–खाद्य सुरक्षा की समस्या, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उद्देश्य व प्रसार, भारतीय खाद्य निगम, लक्षित सार्वजनिक वितरण योजना, एकीकृत बाल विकास योजनाएं (आई.सी.डी.एस) दोपहर भोजन व्यवस्था(एम.डी.एम.), राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक।
22) भूमण्डलीकरण तथा सांख्यिकी–परिचय, आंकड़ों का प्रदर्शन व महत्त्व, समान्तर माध्य, माध्यिका, बहुलक।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व व पश्चात् महिलाओं की स्थिति के तुलनात्मक अध्ययन पर प्रोजेक्ट बनाएँ।
2) उत्तर प्रदेश के मानचित्र में खनिज, शक्ति के साधन, प्रमुख फसलों को मानचत्रि/चार्ट पर प्रदर्शित करें।
3) संयुक्त राष्ट्र संघ, उसके अंगों व कार्यों का दर्शाता एक चार्ट तैयार करें।
4) भारत में विगत दस वर्षों में होने वाली जनसंख्या वृद्धि के आँकड़ों का सांख्यिकी चित्रों द्वारा निर्माण करें।
5) भारतीय इतिहास में स्त्रियों के योगदान (प्राचीन मध्य व आधुनिक काल में) पर एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
6) स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर केन्द्रित एक फोटो एलबम तैयार करें।
7) उत्तर प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े प्रमुख स्थलों तथा घटनाओं पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
8) प्रमुख आयात–निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का एलबम तैयार करें।
9) संयुक्त राष्ट्र संघ के 10 सदस्य देशों के राष्ट्रीय ध्वजों को चार्ट पर बनायें।
10) समाचार पत्रों से सामयिक विषयों से संबंधित सूचनाओं का संकलन कर एक कोलाज बनायें।

11) अपने आस–पास के 20 परिवारों की साक्षरता दर पर एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
12) अपने घर से 100 मीटर की परिधि में आने वाले परिवारो की जनगणना करें व लिंग अनुपात भी अंकित कर रिपोर्ट तैयार करें।

सन्दर्भित पुस्तक– सामाजिक अध्ययन; लेखक– डॉ. मंजू चौधरी, डॉ. विनय कुमार मिश्र, संजय सिंह; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**170**/–

(सेमेस्टर–4) हिन्दी

1) अनिवार्य संस्कृत में अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण, वाचन एवं लेखन।
2) पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को समझकर पढ़ना।
3) दिये गये अनुच्छेदों के शीर्षक लिखना।
4) उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित कविता, निबन्ध, कहानी, एकांकी, यात्रावृतान्त, जीवनी आत्मकथा, पत्रलेखन, नाटक के लेखकों का सामान्य परिचय, उनका अध्ययन व अध्यापन कार्य।
5) अनिवार्य संस्कृत के पाठों का अध्यापन। नीति, श्लोक को कंठस्थ कराना।
6) संस्कृत के शब्द भंडार में वृद्धि हेतु कठिन शब्दों को चुनना, संकलन करना और वाक्य प्रयोग कराना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः सम्बन्धों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–(वीडियो/आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) प्रोजेक्ट कार्य के अन्तर्गत, देखे गए मेले, त्योहार पर्व, घटनाओं, यात्रा वर्णन आदि को प्रस्तुत करना (पावर प्वांइट प्रस्तुतीकरण करना)।
2) हिन्दी की किसी एक विधा गद्य, पद्य, नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास पर प्रोजेक्ट वर्क करना।
3) उच्च प्राथमिक स्तर के किसी एक पाठ का संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करना।
4) निबन्ध–कहानी की विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु चार्ट/सामग्री का निर्माण करना।
5) जीवन एवं आत्मकथा के मूलभूत अन्तर स्पष्ट करने हेतु सामग्री तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तक– हिन्दी; लेखक– डॉ. शैलजा गौतम, डॉ. वाई. पी. सिंह; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य– 100/–

(सेमेस्टर–4) अंग्रेजी

Theoretical Aspects-

1) Different approaches and methods of teaching English
   i) Grammar translation method.
   ii) Direct method
   iii) Structural approach cum situational technique.
   iv) Communicative approach.
   v) Listening with comprehensions-Public announcements, T.V. News etc.

Content specification

1) Grammar
   i) Complex and compound sentences
   ii) Commands and requests
2) **Tenses:** Present, past and Future
   i) Indefinite
   ii) Continuous
   iii) Perfect
   iv) Perfect continuous
3) Grammar
   a) Preposition
   b) Conjunction
4) Writing
   a) Description of picture or objects.
   b) Letter, Application.
   c) Filling up the forms.
5) Lesson planning

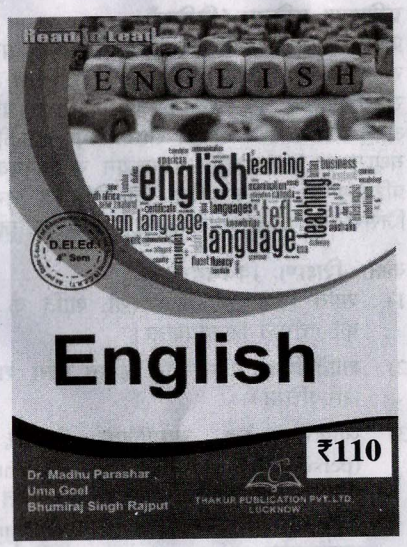

Sessional work/Project work

1) Viva-voce
2) Preparation of TLM.
3) Collection of Language game and tongue twisters.
4) Essay writing, Comprehension and Unseen passage.
5) **On the Spot Project:** Take one News headline with details, an English daily and give each student a fixed time (10 min.) and them to find out the following details.
6) Determiners- article, possessive, demonstrative, distributive.
7) Pronoun, verb, adjective, adverb and its kind.
8) Preposition, Conjunction, Tense, Idioms and phrases and their use.
9) Project on the Picture story preparation: Students will prepare exercises based on their picture story (Each student should be given a separate story to maintain the originality of work).
10) Role play.

सन्दर्भित पुस्तक– अंग्रजी; लेखक– डॉ. मधु पाराशर, उमा गोयल; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य– 110/–

(सेमेस्टर–4) शान्ति शिक्षा एवं सतत् विकास

उद्देश्य

- शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में शांति के प्रति झुकाव पैदा करना।
- प्रशिक्षुओं के भीतर उन सामाजिक कौशलों और अभिरुचियों का पोषण, जो दूसरों के साथ सामन्जस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक है, विकसित करना।
- धर्मनिरपेक्ष संस्कृति का निर्माण एवं तत्सम्बन्धी कर्त्तव्य बोध से अवगत कराना।
- लोकतांत्रिक संस्कृति के सृजन हेतु प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्रीय अखण्डता का महत्त्व एवं विकास में भूमिका से अवगत कराना।
- विश्व बन्धुत्व की भावना विकसित करना।
- भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हेतु शांति शिक्षा के तत्त्वों को समझाना।
- शांतिपूर्ण जीवनशैली हेतु प्रेरित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया / विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई.सी.टी. के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

कक्षा–शिक्षण: विषयवस्तु

1) शांति शिक्षा की अवधारणा, शांति के लिए शिक्षा की वर्तमान आवश्यकता।
2) शांति शिक्षा में भारतीय जीवन मूल्य, शांति कौशल, अभिवृत्तियां।
3) व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास, व्यक्तित्व (personality and Social Development), व्यक्तित्व का स्वरूप, विकास का निर्धारण, आदत एवं स्वभाव (चित्तप्रवृत्ति) (Habits and Temperament), स्व जागरूकता (Self awareness), व्यक्तित्व विकास में वातावरण का प्रभाव। व्यक्तित्व के 5 बड़े गुण (Big Five PersonalityTraits)–खुलापन (openness), चैतन्यता (Conscientiousness), बहिर्मुखता (Extraversion), सहमतिजन्यता (Agreeableness), स्नायुविकृति (Neuroticism), व्यक्तित्व की सामाजिकता और शान्ति।
4) **सहपाठी के आन्तरिक सम्बन्धों की समझ एवं आपसी सम्बन्धों का विकास (Devlopment of Peer Relationship and Interpersonal Understandings)–**
   i) बच्चों के विकास में उसके साथियों की भूमिका (Role of peers in children's development)
   ii) साथी के सम्बन्धों की विशेषता (Characteristic of peer Relationship)
   iii) सामाजिक बोध (Social cognition)
   iv) अक्रामकता (Aggression)
   v) तकनीकी एवं साथी सम्बन्ध (Technology and peer Relationship)
   vi) साथी सम्बन्धों में विविधता एवं सामाजिक बोध। (Diversity in Peer Relationships and social cognition)
5) चरित्र एवं नैतिक शिक्षा, सामाज अनुकूल विकास, (Character and Moral Education. Pro-Social Development), बच्चों के चरित्र निर्माण में माता–पिता तथा परिवार के सदस्यों का योगदान इसे अच्छा बनाने में कुशल शिक्षक का महत्त्व।
6) व्यवहारवाद में उद्दीपन एवं अनुक्रिया (Behaviorism stimuli and responses), शांति के लिए निर्माणकारी व्यवहार के प्रोत्साहन हेतु रणनीति (Strategies for encouraging Productive behaviours), अवांछित व्यवहार को सकारात्मक तरीके से हतोत्साहित करने की रणनीतियाँ (Strategies for discouraging Undesirable Behaviours in a positive way), सकारात्मक व्यावहारिक हस्तक्षेप और सहयोग (Positive Behaviour Intervention Support)।
7) हिंसा क्या है और यह क्या करती है?

   i) हिंसा के प्रकार
      a) मौखिक (Verbal)
      b) मनोवैज्ञानिक (Psychological)
      c) शारीरिक (Physical)
      d) ढांचागत (Structural)
      e) लोकप्रिय संस्कृति में अश्लीलता (Vulgarity in Popular Culture)
   ii) हिंसा के मोर्चे (Frontiers of Violence)
      a) जाति (Caste)
      b) लिंग (Gender)
      c) भेदभाव (Discrimination)
      d) भ्रष्टाचार (Corruption)
      e) साम्प्रादायिकता (Communalism)
      f) विज्ञापन (Advertisement)
      g) गरीबी (Poverty)
   iii) हिंसा का खतरा (Perils of Violence)
   iv) मीडिया और हिंसा (Media and Violence)
   v) विवादों के शांतिपूर्ण हल (Peaceful Resolution of conflicts)
   vi) विवादो के बाद समझौता (Reconciliation after conflicts)
8) भारत में शांति हेतु दार्शनिक चिन्तन, गाँधी दर्शन और शान्ति।
9) तनाव प्रबन्ध (Stress Management), आन्तरिक शान्ति–अष्टांग योग– यम, नियम, आसन, प्राणायम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
10) शांतिमूल्य, मानवाधिकार और लोकतंत्र, भारत में धार्मिक सहिष्णुता एवं राष्ट्रीय एकता, वैश्वीकरण और शान्ति।
11) सतत् विकास (Sustainable Development), सतत् विकास का अर्थ एवं आवश्यकता (Meaning and need), पर्यावरण एवं सतत् विकास (Environment and Sustainable Development)।

प्रयोगात्मक कार्य / सत्रीय / प्रोजेक्ट कार्य / मॉडल

प्रशिक्षु शिक्षकों को शांति शिक्षा एवं सतत् विकास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video Clip, Audio Clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किए जा सकने वाले मॉडल / प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल / प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं–

1) व्यक्तित्व के गुणों– खुलापन, चैतन्यता, बहिर्मुखता, सहमतिजन्यता, स्नायुविकृति एवं इनके सामाजिक महत्त्व पर पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
2) मानवीय गुण व्यक्तित्व की सामाजिकता और शान्ति।
3) तनाव प्रबन्ध, आन्तरिक शान्ति, अष्टागं योग– यम, नियम, आसन, प्राणायम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि पर मॉडल / प्रोजेक्ट / पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
4) शान्तिमूल्य, मानवाधिकार पर मॉडल / प्रोजेक्ट / पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
5) मीडिया और हिंसा पर मॉडल / प्रोजेक्ट / पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
6) हिंसा के कारणों एवं प्रकार पर पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
7) बच्चों के चरित्र निर्माण में परिवार के सदस्यों का योगदान को पॉवर प्वांइट प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।
8) पर्यावरण एवं सतत् विकास पर मॉडल / प्रोजेक्ट / प्रस्तुतीकरण / चार्ट तैयार करें।

सन्दर्भित पुस्तक– शान्ति शिक्षा एवं सतत् विकास; लेखक– **डॉ. निधि, डॉ. पिंकी शर्मा, माधवेन्द्र तिवारी**; ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ। मूल्य–**140** / –